दादी जी के साथ के कुछ अविस्मरणीय यादें...

सिद्धि स्वरूप थे दादी के संकल्प

एक बार दादी को नैरोबी जाना था। ये 1981 अक्टूबर की बात है। तो दादी पाण्डव भवन के मेडिटेशन हॉल में नैरोबी जाने के लिए विदाई ले रही थीं। सभी भाई-बहनें इकट्ठे हो रहे थे दादी को विदाई देने के लिए। एक विदाई समारोह का ही आयोजन किया गया था। तो जब दादी मेडिटेशन हॉल की सीढ़ी उतर रहे थे तो मैंने दादी को ऐसे ही कहा कि मैं आज तक हवाई जहाज में ही नहीं चढ़ा। तो दादी ने कहा कि अच्छा, तुम हवाई जहाज में नहीं चढ़े! तुम नैरोबी चलोगे? बस उसी वक्त दादी ने मुझे कहा और मेरी सारी तैयारी अपने साथ नैरोबी ले जाने के लिए करवा दी। साथ में मोहिनी बहन थीं। नैरोबी में बहुत बड़ी ओरिजन ऑफ पीस कॉन्फ्रेन्स होनी थी जिसमें केन्या के राष्ट्रपति को भी हिस्सा लेना था। मैं कभी हवाई जहाज में नहीं चढ़ा था तो बॉम्बे एयरपोर्ट पर मुझे ट्रॉली चलाना नहीं आ रहा था। ट्रॉली में सारा सामान रखने के बाद दादी ने मुझे खुद पकड़कर के ट्रॉली चलाकर दिखाया कि ट्रॉली ऐसे चलाई जाती है। उसके बाद जब हम नैरोबी एयरपोर्ट पर उतरे तो मैंने खुद ट्रॉली चलानी शुरु की तो दादी बहुत प्रसन्न हुए कि देखो अब इसको ट्रॉली चलाना आ गया।

दादी की संकल्प शक्ति बहुत पॉवरफुल थी। जब दिल्ली के पास ओआरसी की ज़मीन ली गई थी उस समय दादी को हम वो ज़मीन दिखाने के लिए कार में ले जा रहे थे। उस समय मेन गुड़गांव रोड से उस ज़मीन तक जाने वाली जो सड़क है, उसको पटौदी रोड कहते हैं, वो बहुत टूटी-फूटी थी और हम जा रहे थे तो दादी ने मुझे कहा कि बृजमोहन, कम से कम ये सड़क तो ठीक करवा दो! तो मैं सोचने लगा कि उस एरिया का जो एमएलए है उसको कहूंगा ताकि इसका कुछ प्रबंध किया जाये। सभी हैरान होंगे ये जानकर कि बीस दिन के बाद वो सड़क अपने आप बननी शुरु हो गई। मैं खुद हैरान हो गया ये कौन बनाने लगा। तो मुझे पता लगा कि सरकार ने इसको स्टेट हाईवे डिक्लेयर कर दिया है और सरकार खुद ही उस सड़क को बना रही है। अर्थात् दादी की संकल्प सिद्धि इतनी अच्छी थी। - **राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन भाई,अति.महासचिव**

दादी ने समय और शक्ति को कभी व्यर्थ न जाने दिया

दादी संगठन के हर सदस्य के गुण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर, हरेक के भिन्न-भिन्न विचारों का समन्वय करने पर बल देती थी। एक-दो के विचारों को सम्मान देने के फलस्वरूप वो संगठन को आपसी स्नेह और एकता के सूत्र में बांध देती थी। वर्तमान पुरुषोत्तम संगमयुग के अमूल्य समय को व्यर्थ न गंवाकर इसे रचनात्मक कार्यों में लगाने की प्रेरणा दादी देती थीं और सदा इस बात का ध्यान रखती कि समय और शक्ति व्यर्थ न जाये, क्योंकि इन शक्तियों के कारण ही संगठन सुचारु रूप से चलता है। दादी सर्व आत्माओं की सूक्ष्म आत्मिक शक्ति के विकास के लिए समय प्रति समय अखण्ड योग तपस्या(भट्ठी) के विशेष कार्यक्रम आयोजित करवाती थीं। - **राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर भाई, महासचिव,ब्रह्माकुमारीज़**

हर सेवा कार्य को तुरन्त मूर्त रूप देतीं

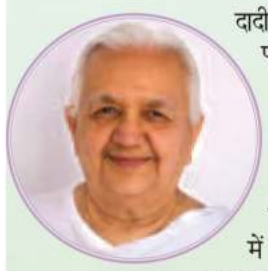

दादी किसी भी नये विचार को बड़े स्तर पर अपनाने से पहले छोटे स्तर पर जाँचती थीं कि ये कार्य उचित परिणाम देगा या नहीं। वे केवल अच्छी प्रशासिका ही नहीं थीं बल्कि उनके भाषणों में चमत्कारिक शक्ति थी। देश-विदेश में उनके भ्रमण ने सभी को ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी तथा वी.आई.पीज़ को संस्था से जुड़ने में बहुत सहायता की। अनेकों ने अपने जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए दादी के निर्देशन का लाभ उठाया। दादी ने इस ईश्वरीय यज्ञ की सेवाओं को परमात्म शक्ति की मदद से सारे विश्व में फैलाया। दादी में निर्णय की शक्ति बहुत प्रखर थी। वे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में देर नहीं करती थीं, बल्कि उसे तुरन्त मूर्त रूप देती थीं। - **राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी,निदेशिका,ज्ञानसरोवर**

निश्चिंत और निर्विघ्न रहने का वरदान मिला

एक बार मैं दादी के सिर पर बाम लगा रही थी, अचानक दादी ने कहा, देखो रानी! बाबा सामने खड़ा है। फिर थोड़ी देर बाद रुककर दादी ने कहा, सारे दिन में कोई समय ऐसा नहीं होता जो बाबा मेरे सामने ना हो। दादी के अनुभवों की गहराई से निकले बोल मेरे हृदय में समा गये और मैं भी सारा दिन बाबा को अपने सामने देखने के पुरुषार्थ में लग गई।

एक बार मैंने दादी से कहा कि मैं जहाँ सेवा पर हूँ वहाँ पर मैं जाना नहीं चाहती। दो दिन के बाद दादी ने बुलाया और पूछा, कितनी बहनें सेवा पर वहाँ समर्पित हैं? मैंने बताया लगभग बारह बहनें हैं। दादी ने कहा कि अपने कारण नहीं लेकिन उन बहनों के कारण आप वहाँ जाओ और निश्चिंत होकर सर्विस करो। दादी की इस आज्ञा का पालन कर मैं सेवास्थान पर पहुँच गई और सारे विघ्न दादी ने समाप्त कर दिए। आज तक निश्चिंत और निर्विघ्न रहने का वरदान जो मिला वह सदा साथ दे रहा है। दादी मदद करती रही हैं और कर रही हैं। - **राजयोगिनी ब्र.कु. रानी दीदी,मुज़फ्फरपुर बिहार**

लव को ही लॉ मानकर एडमिनिस्ट्रेशन संभाला

एक बार दादी का इंटरव्यू लिया गया कि दादी आप इतनी कुशल प्रशासिका कैसे बनीं? तो दादी ने सुनाया कि मैं कभी अपने आपको प्रशासिका नहीं, माँ मानती हूँ। और ये सोचने से पहले ये लोग मेरे लिए क्या करें, मेरा कहना मानें मैं ये सोचती हूँ कि मैं इन सबके लिए क्या करूँ, जो सबको सुख दूँ? वन्डरफुल बात। दूसरी बात दादी ने कहा कि मैं हमेशा ध्यान रखती हूँ कि कोई फैसला अकेले न लूं। सबकी राय से लूं। और वो व्यवहारिक स्वरूप से हमने देखा, ऐसा ही होता था। तीसरी बात दादी ने कही कि अपने इस पूरे विद्यालय में कहीं भी कुछ अगर गलत हुआ तो मैं उसको अपनी गलती मानती हूँ। इन सबके बावजूद भी हमने उनको सदा रिलेक्स, फ्रेश फरिश्ता देखा, इतनी ज़िम्मेवारी धारण करने के बावजूद भी क्योंकि उनको सदा याद रहता था कि मैं नहीं करती। मेरे द्वारा बाबा कराते हैं। चौथी बात उन्होंने बतायी, कोई भी अगर भूल करता तो उसके लिए तुरंत कोई भी निर्णय नहीं लेती हूँ। उसको तीन चांस देती हूँ। तीन चांस के बाद उसके लिए कोई भी निर्णय लिया जाता। तो ये सारी विशेषताएं ये सिद्ध करती हैं कि दादी बाबा पर कितना डिपेंड करते थे। और बाबा को सदा अंग-संग लेकर चलते थे। - **राजयोगिनी ब्र.कु. अनीता दीदी,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका,चंडीगढ**

कथनी और करनी को समान बनाये जीवन को डिक्शनरी बनाया

दादी का जीवन ही एक खुली किताब है। जिनके जीवन का एक-एक पन्ना पलटने से ही उमंग-उत्साह और साहस का स्विच ऑन हो जाता है। कथनी और करनी को एक समान बनाकर दादी ने जीवन को, हर प्रश्न का उत्तर देने वाली डिक्शनरी बनाया। दादी सादगी और स्वच्छता की श्रृंगारी हुई प्रतिमूर्ति थीं। जीवन को त्याग और तपस्या से भरपूर कर ऐसा लाइट, माइट हाऊस बनाया जिससे चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश बिखरने लगा। उसी प्रकाश से आज यह विश्व विद्यालय प्रकाशित हो रहा है। उनके नयनों में रुहानियत, वाणी में मधुरता, कर्मों में कुशलता थी। दादी की एक-एक करनी से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। आज भी उनका व्यक्तित्व हमारे लिए प्रेरणास्रोत है। -**राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी,क्षेत्रीय निदेशिका,काठमाण्डू**

परमात्मा के संदेश वाहक के रूप में दादी

मीडिया वाले जब व्यक्तिगत रूप से या कॉन्फ्रेन्स में आते थे तो दादी सबसे मिलतीं और आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में उमंग-उत्साह दिलाती थीं। ईश्वरीय सेवाओं को बढ़ते हुए देख दादी की शुभ इच्छा थी कि ईश्वरीय सेवाओं के समाचार से सभी लोग अवगत हों। उसी सम्बन्ध में सेवा समाचार जन-जन तक पहुँचाने हेतु 'ओमशान्ति मीडिया' पाक्षिक पत्रिका निकालने का निर्णय 1999 में लिया गया। जो आज उनके संकल्प का साकार रूप बखूबी निभा रहा है। दादी का उमंग सदा रहता था कि बाबा का संदेश सारे विश्व में पहुँचे। उसके लिए उन्होंने विश्व भर से 10,000 मीडिया वालों को बुलाने का संकल्प व्यक्त किया। उनके संकल्प से ही 'पीस ऑफ माइंड' चैनल उपलब्ध हुआ था। - **राजयोगी ब्र.कु. करुणा भाई,अध्यक्ष,मीडिया विंग**

खुद लाइट रहकर हमें भी लाइट रहना सिखाया

जब मैं पहली बार मधुबन में पार्टी लेकर जाने वाली थी, तो मैं असमंजस में थी कि मैं पार्टी संभाल पाऊंगी कि नहीं, लेकिन जब मैं पार्टी लेकर के गई तो दादी इतनी बड़ी होते हुए भी मुझे इतना निश्चिंत किया कि दिव्या तू पहली बार ये पार्टी लेकर आई है, कोई बात नहीं, तुझे कोई भी प्रकार की ज़रूरत हो, तो तुम मुझे कहना। और समय प्रति समय दादी मुझसे सब पूछती और हालचाल लेती रहती थीं। मैंने देखा कि पार्टी को मुझे सम्भालना था, लेकिन ये मुझे महसूस होता था दादी से कि दादी मुझे संभाल रही है। तो ये भी दादी के अंग-संग रहकर के उनकी विशेषताओं को मैंने देखा।

जब कभी सेवा की भी बात आती तो दादी हमें बहुत प्रोत्साहन देतीं, उसमें भी विशेष मेडिटेशन के, बाबा के प्यार के गीत बनाने की बात आती थी तो दादी हमेशा कहतीं मुझे कि दिव्या, तुम साल में एक बाबा के प्यार के, याद के गीतों की कैसेट ज़रूर बनाओ। और हम देखते थे कि इतनी व्यस्त होते हुए भी वे गीत के एक-एक शब्दों को ध्यान से पढ़तीं, पास करतीं और जब सीडी बन जाती तो दादी उन गीतों को भी बहुत ही ध्यान से, एकाग्रता से सुनती थीं और जब वे मुझे मिलती थीं तो दादी कहतीं कि मैंने माउण्ट आबू से आबू रोड आते हुए ये गीत सुना और बहुत ही बाबा की याद के गीत मुझे पसंद आये। तो ऐसे जो भी कलाएं हमारे जीवन में थी, दादी प्रोत्साहन देकर के हमें आगे बढ़ाती थीं। बॉम्बे से कुछ फिल्म कलाकारों को लेकर के एक टेली फिल्म बनाने के लिए हम माउण्ट आबू में गये थे। तब दादी ने सभी डिपार्टमेंट्स के भाई-बहनों से मिलकर इतना हमें उस कार्य के लिए सहयोग दिया, उमंग और उत्साह भरा।
- **राजयोगिनी ब्र.कु. दिव्याप्रभा दीदी,मुम्बई बोरीवली**

दादी ने सभी की भावनाओं का कद्र किया

एक बार जब मैं माउण्ट आबू एक ग्रुप को लेकर आई तो चार-पांच दिन के लिए ही आई थी। वापस जाने का समय आया तो दादी ने कहा कि देखो यहाँ पर राज्यस्थान के राज्यपाल कोर्स करना चाहते हैं आप थोड़े दिन और रूक जाओ। मैंने कहा ठीक है। उसके बाद राज्यपाल कोर्स कर कुछ दिन रहने के बाद चले गये। लेकिन जैसे ही ज्ञान सरोवर का निर्माण होने लगा तो दादी के मन में ये भावना जागृत हुई कि अभी और हैंड्स को बढ़ाना होगा। उस समय दादी एडमिसिट्रेटिव हेड थीं और आराम से मुझे कह सकती थीं कि देखो आपको यहाँ रहना है, लेकिन फिर भी दादी ने बहुत सुन्दर तरीके से एक दिन मुझे बुलाकर कहा कि देखो ऊषा, बाबा के बेहद यज्ञ के कार्य का विस्तार हो रहा है, दादी की भावना है कि आप यहाँ रहो। ताकि अनेक ऐसे वीआईपीज़ गैस्ट आते हैं उनकी सेवा कर सको। लेकिन फिर भी दादी आपको च्वॉइस देती है कि अगर आप सेन्टर पर जाना चाहती हैं तो दादी आपको रोकेगी नहीं। बढ़िया सेन्टर देकर आपको सेन्टर पर भी अवश्य छुट्टी देंगी जाने की। तब मुझे महसूस हुआ कि दादी इतनी बड़ी एडमिनिस्ट्रेटिव हेड, वो मुझे सीधा ऑर्डर कर सकती हैं यहां रहने के लिए, लेकिन दादी ने ऐसा नहीं कहा। दादी ने कहा कि आपकी च्वॉइस जो होगी उसको दादी भी रिस्पेक्ट करेगी। मुझे अन्दर इतना दिल में लगा अगर ऐसी महान आत्मा के संग मुझे रहने को मिले तो मुझे अपने जीवन में कितना कुछ सीखने को मिलेगा। और फिर मैं माउण्ट आबू रुक गयी। - **राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी,वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका,माउण्ट आबू**

दादी नम्रता व प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व की धनी थीं

हमारी दादी माँ मम्मा के बाद माँ के रूप मे पालना देने के निमित्त बनीं। दादी निरहंकारी थीं, उसे हम एक अनुभव से बताना चाहेंगे। एक बार किसी कार्यक्रम में गेट पर खड़े भाई ने एसडीएम को कार्यक्रम में प्रवेश होने नहीं दिया। तो वे काफी नाराज़ हो गये और वहाँ एक बहस का वातावरण बन गया। तभी वहाँ से दादी गुज़र रही थीं। उन्हें जब इस बात का पता चला तो उन्होंने एसडीएम से बड़े प्यार से सम्मान पूर्वक बात की और उस गेट पर खड़े भाई की तरफ से माफी मांगते हुए उन्हें अंदर चलने को कहा। एसडीएम को जब पता चला कि वे इस संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं तो वह उनके समक्ष नतमस्तक हो गया। दादी नम्रता व प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व से सबको अपना बना लेती थीं। - **राजयोगिनी ब्र.कु. चक्रधारी दीदी,अध्यक्षा महिला प्रभाग,ब्रह्माकुमारीज़**